अथ द्वितीयोऽध्याय:

दूसरा ग्यान-करमयोग अद्धयाय

(अर्जन कै बिसाद का उपसंहार)

संजय उवाच

तं तथा कृपयाविष्टमश्रुपूर्णाकुलेक्षणम्।
विषीदन्तमिदं वाक्यमुवाच मधुसूदनः।। १

सञ्जै बोल्ल्या
(किरसण नै अर्जन समझाया)

न्यूँ था अर्जन भर्‌या दया तैँ, घबराई बेकल आँक्ख्याँ मैँ।
आँस्सू उस कै घणे भरे थे, दुक्खी नै न्यूँ किरसण बोल्ल्या।। १

श्रीभगवानुवाच

कुतस्त्वा कश्मलमिदं, विषमे समुपस्थितम्।
अनार्यजुष्टमस्वर्ग्यमकीर्तिकरमर्जुन ।। २

स्रीभगुवान् बोल्ले
(किरसण नै अर्जन समझाया)

कित तैँ तन्नै मोह अँधेरा, गलत बखत पै आ ग्या यो सै?
आच्छे माणस पडैँ न इस मैँ, सुरगविरोधी नरक गेरदा।
अपजस भारी करणँ आळा, अर्जन, तैँ कित इस मैँ पड़ ग्या?।। २

क्लैब्यं मा स्म गमः पार्थ, नैतत् त्वय्युपपद्यते।
क्षुद्रं हृदयदौर्बल्यं, त्यक्त्वोत्तिष्ठ परंतप।। ३

नामर्दी पै मत न्याँ जा तैँ, पिरथा के सुत, तेरै ऊप्पर।
ठीक नहीँ या ओच्छी मन की, कमजोरी, या छोड खड्या हो।
दुस्मन नै तैँ ताप चढाँदा, आज हीजड़ा क्यूक्कर बण ग्या?।। ३

अर्जुन उवाच

कथं भीष्ममहं संख्ये, द्रोणं च मधुसूदन।
इषुभिः प्रतियोत्स्यामि, पूजार्हावरिसूदन।। ४

अर्जन बोल्ल्या
(अर्जन नै आप्णी सोच बताई)

मधु राच्छस नै मारण आळे, किरसण, किस तरियाँ भीसम अर।
गरु द्रोण कै स्याम्हीं मैँ इब, लड़ पाऊँगा, दोन्नूँ मेरे।
पूज्जण जोग्गे, मानजोग सैँ, दुस्मन नै हे मारण आळे।। ४

गुरूनहत्वा हि महानुभावान्, छ्रेयो भोक्तुं भैक्ष्यमपीह लोके।
हत्वार्थकामांस्तु गुरूनिहैव, भुञ्जीय भोगान् रुधिरप्रदिग्धान्।। ५

बड़े प्रतापी प्यार करणिये, बडळ्याँ नैँ बिन मारे किरसण।
इस दुनियाँ मैँ भीख माँग कैँ, पेट भरूँ जो, यो सै आच्छा।।
मार स्वार्थ की इच्छा आळे, बडक्याँ नै इस धरती पै ए।
भोग्गूँ भोग्गाँ खूनसण्याँ नै?।। ५

न चैतद्विद्मः कतरन्नो गरीयो, यद्वा जयेम यदि वा नो जयेयुः।
यानेव हत्वा न जिजीविषामस्तेऽवस्थिताः प्रमुखे धार्तराष्ट्राः।। ६

ना अर यो जाणाँ के हाम् नै, आच्छा? जीत्ताँ या ये जीत्तैँ।
जिन नै मार न जीणा चाह्वाँ, वैँ ध्रितरास्टर के बेट्टे सैँ।
खड़े स्याम्हनै जुध मैँ म्हारै।। ६

कार्पण्यदोषोपहतस्वभावः, पृच्छामि त्वां धर्मसंमूढचेताः।
यच्छ्रेयः स्यान्निश्चितं ब्रूहि तन्मे, शिष्यस्तेऽहं शाधि मां त्वां प्रपन्नम्।।७

(रस्ता मन्नै काढ किसन तैँ)

ज्यान देण मैँ कन्जूसी सै, कायरता यो दोस बडेरा।
उस नै मेरा छत्रीपण का, भाव बिगाड़्या, इब के मन्नै।।
करणा चहिये, समझ न पान्दा, मन सै मेरा, बूज्झूँ तन्नै।
जो सै आच्छा सारी तह्यिाँ, निस्चित वो इब कह तैँ मन्नै।
सिस सूँ तेरा, आग्या दे तैँ, मन्नै तेरी सरण पड़्यै नै।। ७

न हि प्रपश्यामि ममापनुद्याद्यच्छोकमुच्छोषणमिन्द्रियाणाम्।
अवाप्य भूमावसपत्नमृद्धं, राज्यं सुराणामपि चाधिपत्यम्।। ८

नाँ सै दीक्खै मन्नै कोए, मेरै मन का सोग भजावै।
भोत सुकाँदा मेरी इन्द्री, पा कैँ धरती पै निस्कण्टक।।
खुसहाल राज या प्रभुताई, देवाँ पै हो रण मैँ मर कैँ।
जीत जुद्ध हम पावाँगे या, हरी-भरी निस्कण्टक धरती।
प्राण निछावर जै हो ज्यावैँ, तो पावाँ देवाँ पै प्रभुता।। ८

संजय उवाच

एवमुक्त्वा हृषीकेशं, गुडाकेशः परंतप।
न योत्स्य इति गोविन्दमुक्त्वा तूष्णीं बभूव ह।। ९

सञ्जै बोल्ल्या
('नहीँ लडूँगा' बोल्ल्या अर्जन)

न्यूँ कह किरसण नै वो अर्जन, दुस्मन नै जिस तैँ ताप चढै।
'नहीँ लडूँगा', गोबिँद नै न्यूँ, कह कैँ चुप अर गुमसुम हो ग्या।। ९

तमुवाच हृषीकेशः, प्रहसन्निव भारत।
सेनयोरुभयोर्मध्ये, विषीदन्तमिदं वचः।। १०

(किरसण नै अर्जन हँस कै टाळ्या)

दोन्नूँ फौज्जाँ कै बीच खड़े, बैठ्यै मन आळै उस दुखिया।
अर्जन नै न्यूँ हँसदा-सा यो, किरसण बोल्ल्या न्यूँ राज्जा जी।। १०

श्रीभगवानुवाच

अशोच्यानन्वशोचस्त्वं, प्रज्ञावादांश्च भाषसे।
गतासूनगतासूंश्च, नानुशोचन्ति पण्डिताः।। ११

स्रीभगुवान् बोल्ले

सोग्गाँ जोग्गे जो ये नाँ सैँ, तन्नै उन का सोग कर्‌या सै।
अकल की बात बोल्लै सै तैँ, मरे-जियाँ का नाँ सोग करैँ।
पण्डत ज्ञान्नी ततव समझदे।। ११

(आतमग्यान दिया समझाया)

न त्वेवाहं जातु नासं, न त्वं नेमे जनाधिपाः।
न चैव न भविष्यामः, सर्वे वयमतः परम्।।१२

नाँ ए तो मैँ कदे नहीँ था, नाँ तैँ, नाँ ये राज्जे नाँ थे।
नाँ ए अर हम नाँ होवाँगे, सारे ए हम् इस कै पाच्छै।। १२

देहिनोऽस्मिन् यथा देहे, कौमारं यौवनं जरा।
तथा देहान्तरप्राप्तिर्, धीरस्तत्र न मुह्यति।।१३

काया आळै की जिस तह्यिाँ, इस काया मैँ बचपन जोब्बन।
ओर बुढाप्पा आवै सै न्यूँ, काया और मिलै सै अर्जन।
ज्ञान्नी इस मैँ नहीँ बिचळदा।। १३

मात्रास्पर्शास्तु कौन्तेय, शीतोष्णसुखदुःखदाः।
आगमापायिनोऽनित्यास्, तास् तितिक्षस्व भारत।।१४

बिसयाँ नै जो माप्पै-जोक्खैँ, 'मात्रा' इन्द्री वै सब होँ सैँ।
उन के जो विसयाँ तैँ होँ सैँ, स्पर्श छुवन संजोग सबै वो।
कुन्ती के सुत, सर्दी-गर्मी, सुख-दुख नै सैँ देणै आळे।
आन्दे-जान्दे, नित नाँ रहँदे, उन नैँ सह हे भरतगोतिये।। १४

यं हि न व्यथयन्त्येते, पुरुषं पुरुषर्षभ।
समदुःखसुखं धीरं, सोऽमृतवाय कल्पते।।१५

रहै एक-सा दुख-सुख मैँ जो, धीरज राक्खै सब हाल्लाँ मैँ।
इस तह्यिाँ कै जिस माणस नै, नाँ बिचळावैँ सैँ सुख दुख।
पुरसाँ मैँ हे उत्तम अर्जन, मरणै तैँ वो छूट सकै सै।। १५

नासतो विद्यते भावो, नाभावो विद्यते सतः।
उभयोरपि दृष्टोऽन्तस्त्वनयोस्तत्त्वदर्शिभिः।।१६

नाँ जो होन्दा, होवै नाँ वो, नाँ होणा हो नाँ होन्दै का।
दोन्नु का ए ओड़ देक्ख्या, इन का तन्त पिछाणनियाँ नैँ।। १६

अविनाशि तु तद्विद्धि, येन सर्वमिदं
त त म ् ।
विनाशमव्ययस्यास्य, न कश्चित्कर्तुमर्हति।।१७

खतम न होणियाँ उस नै जाण, जिस नै सब यो बिस्तार रच्या।
खतम नहीँ इस अविकारी नै, कोए बी तो सै कर सकदा।। १७

अन्तवन्त इमे देहा, नित्यस्योक्ताः शरीरिणः।
अनाशिनोऽप्रमेयस्य, तस्माद् युध्यस्व भारत।।१८

काया मैँ रहणै आळै इस, नित्त ततव की ये सब काया।
सैँ बताई खतम होणाळी, खतम नहीँ यो कद्दे होन्दा।
इन्द्री ओर प्रमाण दूसरे, जाण सकैँ नाँ इस नै कद्दे।
इस कारण तैँ कूद युद्ध मैँ, भरताँ कै कुळ मैँ हे जाए।। १८

य एनं वेत्ति हन्तारं, यश्चैनं मन्यते हतम्।
उभौ तौ न विजानीतो, नायं हन्ति न हन्यते।।१९

जो इस नै समझै मारणियाँ, अर जो इस नै समझै मार्या।
दोन्नूँ वैँ सैँ नहीँ समझदे, नाँ यो मारै, नाँ मार्या जा।। १९

न जायते म्रियते वा कदाचिन्नायं भूत्वा भविता वा न भूयः।
अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो, न हन्यते हन्यमाने शरीरे।।२०

नाँ यो जाम्मै, मरै न कद्दे, नाँ यो हो कैँ नहीँ रहै गा।
या नाँ फिर तैँ होवै गा यो, नित्य, अजन्मा, सदा रहणियाँ।
यो पहल्याँ तैँ रहँदा आन्दा, नाँ मरदा, जिब मरदी काया।। २०

वेदाविनाशिनं नित्यं, य एनमजमव्ययम्।
कथं स पुरुषः पार्थ, कं घातयति हन्ति कम्।।२१

समझै अविनासी नित जो इस नै, नाँ जलम लेणियाँ अविकारी।
किस तह्यिाँ वो माणस अर्जन, किसै मरावै मारै किस नै?।। २१

वासांसि जीर्णानि यथा विहाय, नवानि गृह्णाति नरोपराणि।
तथा शरीराणि विहाय जीर्णान्यन्यानि संयाति नवानि देही।।२२

लत्ते पाट्टे घसे पुराणे, ज्यूँ छोड नए नर पहरै सै।
न्यूँ ए काया छोड पुराणी, ओर नई ले सै देह आळा।। २२

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि, नैनं दहति पावकः।
न चैनं क्लेदयन्त्यापो, न शोषयति मारुतः।। २३

नाँ इस नै काट्टै सै सस्तर, नाँ इस नै आग जळावै सै।
नाँ अर इस नैँ भेवै पाणी, नहीँ सुकावै बाळ चालदी।। २३

अच्छेद्योऽयमदाह्योऽयमक्लेद्योऽशोष्य एव च।
नित्यः सर्वगतः स्थाणुरचलोऽयं सनातनः।। २४

नाँ काट्टण जोग्गा यो हो सै, नहीँ जळणियाँ भीज्जणियाँ अर।
नाँ ए सुक्कणियाँ बी यो सै, सदा रहणियाँ सब मैँ स्थित यो।
ठूँठ जिसा अडिग, सदा रहँदा।। २४

अव्यक्तोऽयमचिन्त्योऽयमविकार्योऽयमुच्यते।
तस्मादेवं विदित्वैनं, नानुशोचितुमर्हसि।। २५

नाँ यो परगट, सोच्च्या नाँ जा, नाँ यो बिगड़ै, इसा बताया।
इस कारण न्यूँ समझ इसै तैँ, इस का सोग करै सही नहीँ।। २५

अथ चैनं नित्यजातं, नित्यं वा मन्यसे मृतम्।
तथापि त्वं महाबाहो, नैवं शोचितुमर्हसि।। २६

जै तैँ इस नै सदा जामदा, सदा मरणियाँ, या मान्नै सै।
तो बी तैँ बड़ी भुजा आळे, इस का सोग करै, सही नहीँ।। २६

जातस्य हि ध्रुवो मृत्युर्ध्रुवं जन्म मृतस्य च।
तस्मादपरिहार्येऽर्थे, न त्वं शोचितुमर्हसि।। २७

जाम्म्यै का सै पक्का मरणा, पक्का जलम मर्‌यै का बी हो।
इस कारण जो टळ नाँ पावै, मतन्या तैँ सोग करै उस का।। २७

अव्यक्तादीनि भूतानि, व्यक्तमध्यानि भारत।
अव्यक्तनिधनान्येव, तत्र का परिदेवना।। २८

दुनियाँ मैँ जो सैँ वैँ सारे, के थे पहल्याँ, बेरा कोन्या।

होण-मरण का बीच प्रगट सै, बेरा नाँ मरणै पाच्छै का।
इस बारै मैँ के सै रोणा?।। २८

आश्चर्यवत्पश्यति कश्चिदेनमाश्चर्यवद्वदति तथैव चान्यः।
आश्चर्यवच्चैनमन्यः शृणोति, श्रुत्वाप्येनं वेद न चैव कश्चित्।। २९

अचरज-सा सै देक्खै कोए, अचरज-सा कहँदा बी कोए।
अजरज-सा इस नै ओर सुणै, सुण कै बी समझै नाँ कोए।। २९

देही नित्यमवध्योऽयं, देहे सर्वस्य भारत।
तस्मात् सर्वाणि भूतानि, न त्वं शोचितुमर्हसि।। ३०

रहणियाँ सब के गात मैँ यो, मरणै आळा कोनी अर्जन।
दुनियाँ मैँ जो सैँ, उन का तैँ, सोग करै, या सही नहीँ सै।। ३०

(धरम आपणा याद दुवाया)

स्वधर्ममपि चावेक्ष्य, न विकम्पितुमर्हसि।
धर्म्याद्धि युद्धाच्छ्रेयोऽन्यत्क्षत्रियस्य न विद्यते।। ३१

आप्णा धरम बी अर देख कैँ, नाँ बिचळणा ठीक तेरा।
कर्तब खात्तर जुध तैँ आच्छा, ओर किमे नाँ छत्री नै सै।। ३१

यदृच्छया चोपपन्नं, स्वर्गद्वारमपावृतम्।
सुखिनः क्षत्रियाः पार्थ, लभन्ते युद्धमीदृशम्।। ३२

बिन माँग्या यो आप्पै मिल ग्या, खुल्ह्या सुरग का दरवज्जा सै।
सुखिया छत्री, पिरथा के सुत, पावैँ जुद्ध इसा भाग्गाँ तैँ।। ३२

अथ चेत्त्वमिमं धर्म्यं, संग्रामं न करिष्यसि।
ततः स्वधर्मं कीर्तिं च, हित्वा पापमवाप्स्यसि।। ३३

(अपजस का डर बी खोल कह्या)

अर जै तैँ या धरम-लड़ाई, अर्जन, आज करै गा नाँ, तो।
धरम आपणा अर जस खो कैँ, नीच्चै-नीच्चै गेरणियाँ यो।
पाप्पै तन्नै लाग्गेगा रै।। ३३

अकीर्तिं चापि भूतानि, कथयिष्यन्ति तेऽव्ययाम्।
सम्भावितस्य चाकीर्तिर्मरणादतिरिच्यते।। ३४

बदनाम्मी बी तेरी दुनियाँ, सदा करै गी कदे न मिटदी।
नाम्मी माणस की बदनाम्मी, मरणै तैं बी बढ कैं हो सै।। ३४

भयाद्रणादुपरतं, मंस्यन्ते त्वां महारथाः।
येषां च त्वं बहुमतो, भूत्वा यास्यसि लाघवम्।। ३५

डर कैं जुध तैं भाज्ज्या तन्नै, मान्नैंगे सब बीर महारथ।
अर जो तन्नै भोत मानदे, उन कै स्याम्हीं होगा हळका।। ३५

अवाच्यवादांश्च बहून्, वदिष्यन्ति तवाहिताः।
निन्दन्तस्तव सामर्थ्यं, ततो दुःखतरं नु किम्।। ३६

नाँ जौ कहणी चहियैं वैं सब, बात भोत सी बोल्लैं गे रै।
तेरे दुस्मन निन्दा करदे, तेरै बळ की, उस तैं बढ़ कैं।
दुख देणाळा के होगा?।। ३६

हतो वा प्राप्स्यसि स्वर्गं, जित्वा वा भोक्ष्यसे महीम्।
तस्मादुत्तिष्ठ कौन्तेय, युद्धाय कृतनिश्चयः।। ३७

(लड़नै का सै तन्नै फाय्दा)

कै मर जा गा सुरगाँ नै तैं, जीत्या तो भोग्गै गा धरती।
इस कारण उठ कुन्ती के सुत, लड़नै खात्तर निस्चै कर कैं।। ३७

सुखदुःखे समे कृत्वा, लाभालाभौ जयाजयौ।
ततो युद्धाय युज्यस्व, नैवं पापमवाप्स्यसि।। ३८

सुख-दुख नै तैं समझ एक-सा, लाभ-हानि नै, जीत-हार नै।
जुट ज्या बीर, लड़न की खात्तर, नहीं पाप तैं न्यूँ पावैगा।। ३८

एषा तेऽभिहिता साङ्ख्ये, बुद्धिर्योगे त्विमां शृणु।
बुद्ध्या युक्तो यया पार्थ, कर्मबन्धं प्रहास्यसि।। ३९

(करम योग की राह बताई)

'सम्यक् ख्याति' अनित्य नित्य का, जिस तैं भेद समझ मैं आवै।

वो यो ग्यान बताया तन्नै, योग बिसै मैं तो यो सुण ले।
जिस ज्ञान तैं तैं युक्त हो कैं, करमाँ का बन्धन तोड़ै गा।। ३९

नेहाभिक्रमनाशोऽस्ति, प्रत्यवायो न विद्यते।
स्वल्पमप्यस्य धर्मस्य, त्रायते महतो भयात्।। ४०

नाँ इस मैं सै सरू कर्‌यै का, नास कदे बी होन्दा अर्जन।
बिघन अड़ङ्गा नाँ सै इस मैं, तनक-मनक बी इस का पालन।।
सदा बचावै बड्डै डर तैं, 'धरम' सही यो धार्‌या जिस नै।
धारै, उस नै गिरणै नाँ दे।। ४०

व्यवसायात्मिका बुद्धिरेकेह कुरुनन्दन।
बहुशाखा ह्यनन्ताश्च, बुद्धयोऽव्यवसायिनाम्।। ४१

सार तन्त का निस्चै करदी, समझ एक सै इत कुरुनन्दन।
निर्णै निस्चै नाँ कर पान्दे, अविवेकी लोग्गाँ की बुद्धी।।
प्होंच न पान्दी निस्चै पै सै, कई तह्राँ कै भेद्दाँ आळी।
ओड़ कदै नाँ उन का आवै।। ४१

यामिमां पुष्पितां वाचं, प्रवदन्त्यविपश्चितः।
वेदवादरताः पार्थ, नान्यदस्तीति वादिनः।। ४२

जो या फूल्ली-फूल्ली बोल्ली, बोल्लैं सैं मूरख अग्यानी।
भेद बुद्धि पै चाल्लण आळे, बेद्दाँ की बात्ताँ मैं लाग्गे।
'ओर किमे नाँ', कहणै आळे।। ४२

कामात्मानः स्वर्गपरा, जन्मकर्मफलप्रदाम्।
क्रियाविशेषबहुलां, भोगैश्वर्यगतिं प्रति।। ४३

चाहत मैं वैं रमड़े रहँदे, आप्णी इच्छा सब कुछ उन नै।
आच्छी जूणाँ मैं वैं जलमे, मान्नैं सब तैं बडा सुरग नै।।
कर्‌यै करम का फळ देणाळी, भोग्गाँ अर धन सम्पत्ती नै।
पाणै खात्तर तह्राँ-तह्राँ के, कोत्त्यक ओर कबाड़्याँ आळी।
फूल्ली-फूल्ली बोल्ली बोल्लैं।। ४३

भोगैश्वर्यप्रसक्तानां, तयापहृतचेतसाम्।
व्यवसायात्मिका बुद्धिः, समाधौ न विधीयते।।४४

भोग्गाँ मैँ अर ठाठ-बाठ मैँ, फस्याँ-धस्याँ के मन नै वा सै।
बोल्ली खीँच्चै आप्णी कान्हीँ, मन नै कर एकाग्गर होन्दी।
ततवग्यान की सै वा बुद्धी, इसे जण्याँ नै कोनी होन्दी।। ४४

त्रैगुण्यविषया वेदा, निस्त्रैगुण्यो भवार्जुन।
निर्द्वन्द्वो नित्यसत्त्वस्थो, निर्योगक्षेम आत्मवान्।।४५

जुड़े बेद सैँ तीन गुणाँ तैँ, तीन गुणाँ तैँ ऊपर हो ज्या।
सुख-दुख अर आप्पस मैँ ए, लड़न-भिड़न का भाव छोड़ कैँ।
रज तम नै तज सदा सत्त्व मैँ, टिक कै तैँ अर पाण खोण तैँ।
बण ज्या आप्णा मालक अर्जन।। ४५

यावानर्थ उदपाने, सर्वतः सम्प्लुतोदके।
तावान् सर्वेषु वेदेषु, ब्राह्मणस्य विजानतः।। ४६

जितणा मतबल तिस नै खोणा, प्याऊ या कूवै तैँ हो सै।
उतणा मतबल सदा समाया, ठाठ मारदै पाणी आळै।
सब ओड़ लबालब जोहड़ मैँ, उतणा हौवै सब बेद्दाँ मैँ।
तन्त जगत् का जाणनियै नै।। ४६

कर्मण्येवाधिकारस्ते, मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि।। ४७

काम्माँ का करणा ए तेरै, बस मैँ होवै सै रै अर्जन।
नाँ फळ उन का पाणा बस मैँ, फळ की खात्तर करम न करणा।
नाँ तैँ फँसणा कर्मत्याग मैँ, करम छोड़ कैँ बैट्ठै नाँ तैँ।। ४७

योगस्थः कुरु कर्माणि, सङ्गं त्यक्त्वा धनंजय।
सिद्ध्यसिद्ध्योः समो भूत्वा, समत्वं योग उच्यते।। ४८

उल्टे, सीद्धे सब हाल्लाँ मैँ, एक जिसा तैँ रहँदा अर्जन।
कर कर्माँ नै आसक्ती तज, युद्धाँ मैँ धन जीत्तणिये।।

मिलै करम का फळ, या नाँ ए, दोन्नू स्थिति मैँ एक जिसा रह।
सम रहणा सै योग कुहावै।। ४८

दूरेण ह्यवरं कर्म, बुद्धियोगाद्धनंजय।
बुद्धौ शरणमन्विच्छ, कृपणाः फलहेतवः।।४९

भोत्तै हळका फळ की इच्छा, रख कैँ करम कर्या जो सै वो।
तन्तग्यान तैँ हौवै, अर्जन, तन्तग्यान की सरण चाह तैँ।
तरस खाण के लायक वैँ सैँ, फळ की खात्तर करम करैँ जो।।४९

बुद्धियुक्तो जहातीह, उभे सुकृतदुष्कृते।
तस्माद्योगाय युज्यस्व, योगः कर्मसु कौशलम्।।५०

समताबुद्धी आळा माणस, त्याग्गै सै इत आच्छे-माड़े।
दोन्नूँ करमाँ तैँ नाँ बँधदा, इस कारण तैँ समता मैँ जुत ज्या।।
करम कर्या बी बाँद्धै कोन्या, या चातरी ए योग हो सै।
बाँध सकै नाँ कर्ता नै जो।। ५०

कर्मजं बुद्धियुक्ता हि, फलं त्यक्त्वा मनीषिणः।
जन्मबन्धविनिर्मुक्ताः, पदं गच्छन्त्यनामयम्।।५१

समता बुद्धी आळे चात्तर, करमाँ कै फळ नैँ तज छूट्टे।
जलम-मरण कै बन्धन तैँ वैँ, माणस पद पान्दे अविकारी।। ५१

यदा ते मोहकलिलं, बुद्धिर्व्यतितरिष्यति।
तदा गन्तासि निर्वेदं, श्रोतव्यस्य श्रुतस्य च।।५२

अर्जन, जिद या तेरी बुद्धी, ममता काद्दा पार करै गी।
तद तैँ भेद समझ पावै गा, सुणनै जोग्गै ओर सुण्यै का।। ५२
(आप्णी बुद्धी नै स्थिर कर ले)

श्रुतिविप्रतिपन्ना ते, यदा स्थास्यति निश्चला।
समाधावचला बुद्धिस्तदा योगमवाप्स्यसि।।५३

तह्याँ-तह्याँ की बात्ताँ नै सुण, बिखरी अलझी तेरी बुद्धी।
टिक ज्या गी बिन बिचळ्यैँ अर्जन, चित की एकाग्गरता मैँ स्थित।

होगी परमात्मा मैँ तद तैँ, परम ततव नै समझैगा रै।। ५३

अर्जुन उवाच

स्थितप्रज्ञस्य का भाषा, समाधिस्थस्य केशव।
स्थितधीः किं प्रभाषेत, किमासीत व्रजेत किम्।।५४

अर्जन बोल्ल्या

(अर्जन बूज्झै स्थिर बुद्धी के लच्छण)

मन की एकाग्गरता मैँ स्थित, जिस की बुद्धी टिकै परम पै।
उस नै बोल्लैँ के सैँ केसो, लक्खण उस का होवै के सै?।।
टिकी समझ आळा माणस के, बोल्लै, खुद ब्यौहार करै सै?।
क्यूक्कर बैट्ठे इन्द्री आण्णी, काब्बू मैँ रख? चाल्लै क्यूक्कर?।
उन तैँ आण्णे काम करै सै?।। ५४

श्रीभगवानुवाच

प्रजहाति यदा कामान्, सर्वान् पार्थ मनोगतान्।
आत्मन्येवात्मना तुष्टः, स्थितप्रज्ञस्तदोच्यते।। ५५

स्रीभगुवान् बोल्ले

(किरसण नै वो समझाया)

त्यागै जिद सै इच्छा सारी, अर्जन, मन मैँ ऊट्ठैँ जो सैँ।
खुद मैँ खुद तैँ खुस जिद रहँदा, थिर मति आळा तदै कुहावै।। ५५

दुःखेष्वनुद्विग्नमनाः, सुखेषु विगतस्पृहः।
वीतरागभयक्रोधः, स्थितधीर्मुनिरुच्यते।। ५६

दुक्खाँ मैँ नाँ बिचळ्यै मन का, सुख मैँ जिस की इच्छा नाँ हो।
खतम राग, डर, गुस्सै आळा, माणस थिरमति मुनी कुहावै।। ५६

यः सर्वत्रानभिस्नेहस्तत्तत्प्राप्य शुभाशुभम्।
नाभिनन्दति न द्वेष्टि, तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता।। ५७

जिस कै कित्तै प्रेम नहीँ सै, वो-वो पा कैँ आच्छा-माड़ा।
नाँ लाड करै, ना दुत्कारै, उस की बुद्धी होवै स्थिर सै।। ५७

यदा संहरते चायं, कूर्मोऽङ्गानीव सर्वशः।
इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेभ्यस्तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता।। ५८

जिद सिमटावै यो इन्द्री, उन के सारे बिसयाँ तैँ ज्यूँ।
कछुवा आण्णै अङ्गाँ नैँ सै, उस की बुद्धी होवै स्थिर सै।। ५८

विषया विनिवर्तन्ते, निराहारस्य देहिनः।
रसवर्जं रसोऽप्यस्य, परं दृष्ट्वा निवर्तते।। ५९

(बिसयाँ मैँ मन लाग्ग्या ह्वै सै)

बिसै हो ज्याँ दूर सैँ उन का, भोग न करदै माणस के सब।
आच्छा लगणा छूट्टै नाँ सै, यो बी इस का परम ततव नै।
देख समझ कैँ परै हटै सै।। ५९

यततो ह्यपि कौन्तेय, पुरुषस्य विपश्चितः।
इन्द्रियाणि प्रमाथीनि, हरन्ति प्रसभं मनः।। ६०

(इन्द्री खीँच्चैँ आण्णी कान्हीँ)

कुन्ती के बेट्टे रै अर्जन, इन्द्री होँ सैँ भोत्तै परबल।
कोसिस करदै ग्यान्नी कै बी, ले भाज्जैँ हाँग्धैँ तैँ मन नै।। ६०

तानि सर्वाणि संयम्य, युक्त आसीत मत्परः।
वशे हि यस्येन्द्रियाणि, तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता।। ६१

उन सब नै काब्बू मैँ कर कैँ, मन नै एकाग्गर कर बैट्ठै।
मेरै आस्रित हो कैँ माणस, मन्नै ए जो परम समझ कैँ।
बस मैँ जिस कै इन्द्री होन्दी , उस की बुद्धी थिर, टिक ज्या सै।। ६१

ध्यायतो विषयान् पुंसः, सङ्गस्तेषूपजायते।
सङ्गात्सञ्जायते कामः, कामात्क्रोधोऽभिजायते।। ६२

(बिसयाँ कै ध्यान तैँ नुकसान)

ध्यान्दे बिसयाँ नै माणस की, आसक्ती उन मैँ हो ज्या सै।
आसक्ती तैँ हो सै चाहत, पूरी नाँ होई चाहत तैँ।
गुस्सा मन मैँ हो ज्या, भर ज्या।। ६२

क्रोधाद्भवति सम्मोहः, सम्मोहात्स्मृतिविभ्रमः।
स्मृतिभ्रंशाद् बुद्धिनाशो, बुद्धिनाशात्प्रणश्यति।। ६३

गुस्सै तैँ हो पागल माणस, आग्गा पीच्छा आप्पा भूल्लै।
आप्पा भूल्लैँ बुद्धि नस्ट हो, गलत सही मैँ फरक न करदा।
बुद्धिनास तैँ माणस बिनसै।। ६३

रागद्वेषवियुक्तैस्तु, विषयानिन्द्रियैश्चरन्।
आत्मवश्यैर्विधेयात्मा, प्रसादमधिगच्छति।। ६४

(इन्द्री बस मैँ राक्खण के फाय्दे)
राग द्वेस तैँ दूर रहैँ जो, बुद्धी कै बस रहणै आळी।
इन्द्रियाँ तैँ बिसै जो भोग्गै, आप्णै ऊप्पर काब्बू रखदा।
माणस निर्मलता सुख पावै।। ६४

प्रसादे सर्वदुःखानां, हानिरस्योपजायते।
प्रसन्नचेतसो ह्याशु, बुद्धिः पर्यवतिष्ठते।। ६५

बुद्धी निर्मल सुखिया जिस की, सब दुक्खाँ की हानी उस कै।
हो ज्या निर्मल मन आळै की, बुद्धी झट तैँ थिर टिक ज्या सै।। ६५

नास्ति बुद्धिरयुक्तस्य, न चायुक्तस्य भावना।
न चाभावयतः शान्तिरशान्तस्य कुतः सुखम्।। ६६

नाँ होन्दा यो ग्यान ततव का, समता मैँ जो टिक्या न, उस नै।
समता भाव नहीँ सै जिस कै, नहीँ प्रवित्ती ततवग्यान मैँ।।
नहीँ प्रवित्ती जिस की उस नै, मिलै सान्ति नाँ अर असान्त नै।
सुख आनन्द भला कित तैँ हो?।। ६६

इन्द्रियाणां हि चरतां, यन्मनोऽनु विधीयते।
तदस्य हरति प्रज्ञां, वायुर्नावमिवाम्भसि।। ६७

इन्द्री भाज्जैँ बिसयाँ कान्हीँ, मन जो इन कै सात्थै चाल्लै।
वो माणस की बुद्धी हरदा, हवा नाव नै ज्यूँ पाणी मैँ।। ६७

तस्माद्यस्य महाबाहो, निगृहीतानि सर्वशः।
इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेभ्यस्तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता।। ६८

मजबूत भुजा आळे अर्जन, जिस की इन्द्री रोक्की राक्खी।
सभी तह्वाँ सैँ उन के बिसयाँ तैँ, उस की बुद्धी निस्चल थिर सै।। ६८

या निशा सर्वभूतानां, तस्यां जागर्ति संयमी।
यस्यां जाग्रति भूतानि, सा निशा पश्यतो मुनेः।। ६९

जो सै रात्री सब जीवाँ की, देख सकैँ नाँ जिस मैँ कुछ वैँ।
अग्यान नीँद मैँ पड़ सोवैँ, ताण रजाई गफ़लत की सब।।
उस मैँ जाग्गै संयम आळा, इन्द्री मन पै काब्बू रखदा।
जिस मैँ जाग्गैँ प्राणी सारे, ग्यान प्रकासित सुखमय लाग्गै।
वा सै रात्री ततव समझदे, मौन भाव तैँ देक्खणियै की।। ६९

आपूर्यमाणमचलप्रतिष्ठं, समुद्रमापः प्रविशन्ति यद्वत्।
तद्वत्कामा यं प्रविशन्ति सर्वे, स शान्तिमाप्नोति न कामकामी।। ७०

सब कान्हीँ तैँ भर्‌या-पुर्‌या जा, सै पर अविचल मर्यादा मैँ।
नीर समावै उस सागर मैँ, न्यूँ सब चाह समावैँ जिस मैँ।
वो माणस सान्ती पावै, नाँ वो, जो बिसयाँ नैँ चाह्वै।। ७०

विहाय कामान्यः सर्वान्, पुमांश्चरति निःस्पृह।
निर्ममो निरहङ्कारः, स शान्तिमधिगच्छति।। ७१

छोड़ बिसै जो सारे माणस, जीणा जीवै चाह छोड कैँ।
'मेरा', 'मैँ' का भाव छोड कैँ, माणस वो सान्ती पावै सै।। ७१
(स्थिर बुद्धी की करी बडाई)

एषा ब्राह्मी स्थिति पार्थ, नैनां प्राप्य विमुह्यति।
स्थित्वास्यामन्तकालेऽपि, ब्रह्मनिर्वाणमृच्छति।। ७२

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे
श्रीकृष्णार्जुनसंवादे सांख्ययोगो नाम द्वितीयोध्यायः।। २।।

या ब्रह्म होण की हालत अर्जन, नाँ पा या मूढ बणै माणस।
टिक कैँ इस पै अन्त समै बी, लीन ब्रह्म मैँ माणस हो ज्या।। ७२

(अद्धयाय कै अन्त मैँ मङ्गळ)

बिक्रम संमत बीस सदी जिब, पूरी होई बरस बहत्तर।
पूरा हो ह्या, फूल खिलै जिब, महकी-महकी बाळ बह्वै सै।।१
फाग्गण सुदि की तीज तिथी मैँ, सुक्रवार कै रात्रिसमय मैँ।
नौ बज कै चाळीस मिनिट पूरे, अध्याय दूसरा यो पूर्या।। २
सौँप्या माँ कै चरणाँ ऊप्पर, माँ की बोल्ली मैँ तोत्तै नै।
आनन्द पढणियाँ नै देवै, मेरा बी हो जलम क्रितारथ।। ३
भारत माँ की झोळी कै इस, कूणै मैँ यो फूल चढाया।
महकै माट्टी हरियाणा की, गोबिँद-मुख-पराग तैँ महकी।। ४

स्रीमती सीत्तादेब्बी अर स्रीस्रीनिवास सास्तरी कै बेट्टै सिवनारायण सास्तरी कै हरियाणी भास्सा कै गीत्तायन काब्ब्यभास्स्य मैँ दूसरा अध्याय पूरा होया।। २।।

पूर्वसलोकयोग ४७ + ७२ = ११९